रहें न रहें हम-महका करेंगे, ऐसे थे मजरूह सुल्तानपुरी

मजरूह ने लगभग 350 फिल्मों में दो हजार से ज्यादा गीत लिखे।

नजीम नकवी

फिल्मी गीतों के बेताज बादशाह 'मजरूह सुल्तानपुरी' (1 अक्टूबर 1919-23 मई 2000) इस दुनिया से रुखसत हो गए लेकिन हमेशा महकते रहेंगे 'बन के कली, बन के सबा, बाग-ए-वफा में।' (ममता फिल्म (1966) का यादगार गीत जिसे मजरूह-रौशन की जोड़ी का शाहकार गीत माना जाता है।) नाम था असरार हसन खां लेकिन पठान नहीं थे। वतन था सुल्तानपुर लेकिन जो मिला, बंबई से मिला।

'मजरूह सुल्तानपुरी' कलमी नाम था। मजरूह खुद भी इस बात को मानते रहे- मैं 1945 में बंबई आया, शायरी मैं पहले भी करता था लेकिन इस शहर में आकर मैं फिल्मों से भी जुड़ा और प्रगतिशील लेखक संघ से भी, यानि जो भी फिल्मी या इल्मी शोहरत पाई वो इसी शहर से मिली।

मजरूह के फिल्मी करियर का आगाज फिल्म 'शाहजहां' (1946) से होता है। ये किस्सा भी बड़ा दिलचस्प है, हुआ यूं कि मजरूह सुल्तानपुरी एक मुशायरे में बंबई आए थे, बात है 1945 की। मुशायरे में उन्होंने अपनी गजलों से धूम मचा दी। इस मुशायरे में फिल्म प्रोड्यूसर कारदार साहब भी मौजूद थे।

बाद में कारदार साहब ने जिगर मुरादाबादी से मजरूह का जिक्र किया और गीत लिखवाने कि ख्वाहिश जताई। जिगर ने मजरूह को कारदार का पैगाम पहुंचाया तो उन्होंने सुनते ही मना कर दिया 'नहीं मैं फिल्मों के लिए नहीं लिखूंगा'। फिर जब जिगर मुरादाबादी ने समझाया कि इसमें पैसे खूब मिलते हैं तो समझ गए और इस तरह नौशाद-मजरूह कि जोड़ी ने 'शाहजहां' में साथ काम किया।

इस फिल्म का केएल सहगल कि आवाज में गाया मजरूह का गीत हमेशा-हमेशा के लिए मशहूर हो गया 'गम दिए मुस्तकिल कितना नाजुक है दिल, ये न जाना- हाय हाय ये जालिम जमाना'।

मजरूह ने लगभग 350 फिल्मों में दो हजार से ज्यादा गीत लिखे लेकिन आज उनकी पुण्य-तिथि पर आइए उनसे जुड़े कुछ दिलचस्प किस्से आपके साथ शेयर करते हैं जो मैंने एसएम मेहदी साहब से सुने, जो खुद अपने जमाने के मशहूर ड्रामा-निगार थे और मजरूह के बहुत करीबी दोस्त भी।

इस बात पर मजरूह को बड़ा फख्र था कि मैं राजपूत हूं... खान तो दुमछल्ला लगा दिया गया था, किसी जमाने में, शायद मुगलों के जमाने में, पुरखों में से किसी को 'खां' का खिताब दे दिया गया था, जैसे सर सय्यद अहमद को खान का खिताब मिला था, वैसे ही हमारे यहां खान का खिताब दे दिया गया वर्ना हम लोग राजपूत हैं।

मजरूह कि गजल में जो बांकपन है वो राजपूतों वाला ही है। दरअसल मजरूह कि गजलों को पढ़िए तो पता चलता है कि लफ्जों को चुनने की और अच्छे लफ्जों को पिरोने की महारत किसे कहते हैं। मुशायरों में वो शुरू से ही बहुत मकबूल थे। बहुत अच्छी आवाज थी पढ़ने का अंदाज भी बहुत अच्छा था, खूबसूरत रंगों शेरवानियां पहनने का बड़ा शौक था। मलमल का कुर्ता और वही खास लखनवी पाजामा।

मजरूह जिस खानदान से आते थे वो बहुत पुराने ख्यालों का था शायद इसीलिए अंग्रेजी तालीम से दूर रखे गए। अरबी-फारसी सीखी और फिर तिब (हकीम की) तालीम ली। कुछ दिनों तक हकीमी भी करते रहे लेकिन शेर कहना भी जारी रहा। फिर जब बहुत मशहूर होने लगे। तो हिकमत छोड़कर बंबई आ गए। लेकिन अभी वही राजपूतों वाली बरकरार रही।

बम्बई में जिस दिन छुट्टी होती थी मतलब किसी काम से

निकलना नहीं होता था तो जहां रहते थे वहीं अपने बड़े से कमरे में जितने भी अवध और लखनऊ के लोग बंबई में या फिल्मी दुनिया में थे, सबको बुला लेते, तो हम अक्सर लोगों से कहते थे भई मजरूह सुल्तानपुरी बंबई में, अवध के एंबेसडर हैं। अवध की तहजीब अवध के किस्से अगर सुनना हों तो आप मजरूह के दीवान-खाने में जाकर बैठिए।

मजरूह ने जब शुरू किया फिल्मों में काम तो जाहिर है बेताज बादशाह हो गए। इनसे ज्यादा मकबूल और कोई था ही नहीं, सब इनकी तरफ ही दौड़ते थे कि हमारी फिल्म के गाने लिख दीजिये।

मजरूह ने बहुत फिल्में लिखीं और बेइंतेहा गाने उनके मकबूल हुए लेकिन फिल्मों और अपनी निजी जिंदगी को अलग-अलग रखते थे। मसलन एक बार मेरी बीवी ने कहा, मजरूह मुझे फिल्मों में काम करना है तो कहने लगे, खबरदार नाम भी न लेना। ये जगह शोरफा (शरीफ लोग) के लिए नहीं हैं। जब पूछा जाता कि हजरत फिर आप क्यों हैं यहां तो कहते भई पैसों के लिए काम करता हूं लेकिन फिल्मी जिंदगी पसंद नहीं है मुझे।

उनका एक गाना उस जमाने में बड़ा मशहूर हुआ था- कभी आर कभी पार लगा तीरे नजर.... मैंने कहा मजरूह यार तुम तो बड़े अच्छे शायर हो फिर तुमने एक मुहावरे को दो-लखत (दो टुकड़े) क्यों कर दिया? अभी तक तो लोगों को 'आर-पार' कहते ही सुना था। अमां कमाल कर दिया तुमने। कहने लगे इसका किस्सा सुनोगे... ?

हुआ यूं कि म्यूजिक डायरेक्टर ओपी नय्यर ने एक धुन सुनाई और कहा भई इसपर गाना लिखो। मैंने उसी वक्त एक मुखड़ा लिख कर उन्हें दिया... सुनकर बोले नहीं भई नहीं चलता ये... मैंने दूसरा मुखड़ा दिया.. अंअंअं... नहीं भई ये भी नहीं चलता... हमने तीसरा मुखड़ा दिया। फिर वही.. ये भी नहीं चलता... अरे भाई थक गए हम ये भी नहीं चलता वो भी नहीं चलता... परेशानी में मैंने माचिस कि डिबिया उठाई और उसे बजा-बजा कर गुनगुनाने लगा...कभी आर कभी पार लगा... वो फौरन चीख पड़े हां-हां यही यही मजरूह यही चाहिए.... ।

मुल्क को अभी आजादी नहीं मिली थी। उन दिनों बंबई में प्रगतिशील लेखक संघ कि बड़ी अहमियत थी। हम सब (सज्जाद, जहीर, कैफी, कृष्ण चंदर, राजिंदर सिंह बेदी वगैरह) रोज मिलते थे। यहां मजरूह ने भी आना शुरू कर दिया। यहीं आकर उनकी शायरी का अंदाज और उसका मूड बिलकुल अलग हुआ।

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर
लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया

ये उनका उसी जमाने का शेर है। शुरू में इसका दूसरा मिसरा (पंक्ति) इस तरह था कि गैर साथ आते गए और कारवां बनता गया। हम लोगों के बीच जब मजरूह ने इसे सुनाया तो बहस होने लगी। इस बात पर एतराज हुआ कि भई ये 'गैर' का क्या मतलब है? उस वक्त कृष्ण चंदर ने मजरूह के 'गैर' शब्द की काफी हिमायत की, कहा आप लोग बेवजह इस गैर के पीछे पड़ गए हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है बल्कि इस जगह गैर लफ्ज ही सबसे ज्यादा फिट हो रहा है।

उस वक्त कृष्ण चंदर ने बहुत अच्छी तकरीर की। जेहनी सफर में जब इंसान चलता है तो हर शख्स उसके लिए गैर होता है, और फिर जब वो साथ मिल जाता है तो अपना हो जाता है। चूँकि कृष्ण चंदर की बात में दम था इसलिए हम सभी मान गए, लेकिन बाद में मजरूह ने जब अपना दीवान प्रकाशित किया तो छपी हुई गजल में गैर की जगह 'लोग' शब्द रख दिया। मैंने पूछा ये क्या किया? उस दिन बहस में तो सबने गैर को सही माना था? बोले नहीं मुझे लगा कि गैर से ज्यादा अच्छा लफ्ज 'लोग' है इसलिए मैंने इसे बदल दिया... तो ये प्रगतिशील लेखक संघ कि बहसें ही थीं जिनसे मजरूह जैसे लोगों की जेहनी तरबियत एक नए तरीके से हुई।

सुतुने दार पे रखते चलो सरों के चिराग
जहाँ तलक ये जूनून कि सियाह रात चले

(बाकी पेज 18 पर)

इतिहास में 24 मई

देश और दुनिया के इतिहास में 24 अप्रैल कई महत्वपूर्ण कारणों से दर्ज है जिनमें से ये प्रमुख हैं।

1660- ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितिय ने नीदरलैंड का दौरा किया।

1896- देश के लिए अपनी जान देने वाले करतार सिंह सराभा का जन्म हुआ था।

1954- माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला बछेंद्री पाल का जन्मदिन है।

1957- कोलंबिया में भूकंप के झटके महसूस किए गए।

1994- मीना (सऊदी अरब) में हज से जुड़े एक समारोह के समय भगदड़ मच जाने से 250 लोगों से भी अधिक हाजियों की मृत्यु।

2000- दक्षिण लेबनान से 22 साल का खूनी दौर समाप्त कर इस्रायली सेना वापस लौटी।

2000- दक्षिण लेबनान से 22 साल का खूनी दौर समाप्त कर इस्रायली सेना वापस लौटी।

2000- हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध गीतकार और शायर मजरूह सुल्तानपुरी की मौत हो गई।

2002- रूस और अमेरिका ने मास्को संधि पर हस्ताक्षर किया।

2002- नेपाल में नेपाली कांग्रेस ने प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा को नेपाली कांग्रेस पार्टी से निलंबित किया।

2003- इस्रायल के प्रधानमंत्री एरियल शैरोन ने पश्चिम एशिया शांति योजना को स्वीकार किया।

2005- एनबी इंकबेयर मंगोलिया के राष्ट्रपति चुने गए।

2007- एमा निकोलसन रिपोर्ट यूरोपीय संघ की संसद में पारित।

2008- उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य कर्मचारियों का मंहगाई भत्ता छह प्रतिशत बढ़ाने का फैसला किया।

फुटबॉल इतिहास में आज का दिन शोक और सबक के तौर पर दर्ज है। 24 मई 1964 को रेफरी के एक विवादास्पद फैसले से स्टेडियम में ही भगदड़ मच गई। तीन सौ से ज्यादा लोग मारे गए।

24 मई 1964 के दिन दक्षिण अमेरिकी देश पेरू की राजधानी लीमा में ओलंपिक क्वालिफाईंग का मैच खेला जा रहा था। पेरू का सामना अर्जेंटीना से था। घरेलू फैन्स पूरे उत्साह के साथ पेरू का समर्थन कर रहे थे। मैच खत्म होने में कुछ ही मिनट बाकी थे, तभी पेरू ने एक गोल किया। रेफरी ने इसे गोल मानने से इनकार कर दिया।

इसके साथ ही स्टेडियम में हिंसा भड़क उठी। भीड़ को काबू में करने की कोशिशों की वजह से भगदड़ मच गई। आठ सौ से ज्यादा लोग कुचले गए। 300 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई और 500 को गंभीर चोटें आईं।

भविष्य में ऐसी भगदड़ों को टालने के लिए दुनिया भर के फुटबॉल संघों ने पहल करनी शुरू की। लेकिन 1982 में फिर एक ऐसा ही हादसा हुआ और पता चला कि कुछ देशों ने पेरू से सबक नहीं लिया। मॉस्को के स्टेडियम में मची उस भगदड़ में 340 लोग मारे गए। इन हादसों के कारण क्राउड मैनेजमेंट पर शोध होने लगा। पता चला कि अक्सर भीड़ को नियंत्रित करने की पुलिस की कोशिशें ही भगदड़ के लिए जिम्मेदार होती हैं। छोटे मोटे हादसे इसके बाद भी हुए लेकिन वक्त बीतने के साथ स्टेडियम सुरक्षित होने लगे।

सुडोकू - 4056 (Medium)

2					4	1		
	5		9			7		
4					1			
		9	5	3				
		8				6		
				6	7	4		
			8					1
		7			3		9	
		5	2					4

इस पहेली की खाली जगहों में एक से नौ के बीच के अंक भरे जाने हैं। किसी भी आड़ी या खड़ी पंक्ति में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है 3-3 के प्रत्येक ब्लाक दिए गए हैं। किसी ब्लाक में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है।

हल करने का समय, शुरु........... खत्म...........

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

अंक जाल - 2966

■	18	11	37	37	■	■	14	17	■
22		4		8	■	7		5	14
14	7		5		■		2		14
■		5		7		6		5	44
■	■	■	2		5		6		30
32		8		3		6	■	■	■
34	7		2		1		6		■
16		8		■		2		4	17
18	5		7	■	8		1		20
■	25	25	■	■	30	52	10	9	■

खाली जगहों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर बाएं से दाएं व ऊपर से नीचे जोड़ें, उत्तर मटमैले रंग में दिया गया है। चारों कोनों में दी गई संख्या की जोड़ दोनों ओर से एक समान होनी चाहिए।

हल करने का समय, शुरु........ खत्म........

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

Name, Fame and Game-3976

आज हम दे रहे है आईपीएल 2017 के कुछ टाप बल्लेबाजों के नाम जो अंग्रेजी अक्षरों की इस भीड़ में आपको ढूंढना है। नाम के हिज्जे अंग्रेजी में हैं और ये दाएं से बाएं, बाएं से दाएं, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर या तिरछे- किसी भी दिशा में हो सकते हैं। उत्तर आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर। इन नामों की फेहरिस्त लंबा होने से हम इन्हें किस्तों में ले रहे हैं।

AMRAHANE
BASTOKES
BBMCCULLUM
DAWARNER
GGAMBHIR
GJMAXWELL
HMAMLA
KAPOLLARD
KDKARTHIK
MKPANDEY
MKTIWARY
NRANA
PAPATEL
RATRIPATHI
RGSHARMA
RRPANT
RVUTHAPPA
SDHAWAN
SKRAINA
SPDSMITH
SVSAMSON

N

W / E

D	E	I	B	D	R	T	U	G	F	X	V	K	Z	X	I	R	A
B	R	N	F	U	B	X	D	X	G	M	I	W	E	S	C	M	N
R	I	A	A	E	U	K	Y	M	V	A	M	N	U	G	R	B	A
F	E	N	L	H	T	R	O	N	O	S	M	A	S	V	S	A	R
C	G	G	Y	L	A	L	M	A	M	H	J	B	K	M	T	M	N
T	B	G	O	W	O	R	H	U	K	E	O	E	H	O	U	R	E
D	U	B	I	S	V	P	M	Z	I	U	Q	S	J	I	U	A	V
B	S	T	S	E	D	V	A	A	H	S	F	P	T	T	R	H	A
P	K	C	N	R	C	Q	E	K	T	V	A	F	N	Z	A	S	U
M	K	W	E	V	E	G	A	N	R	P	S	K	V	L	U	G	X
K	P	J	W	S	A	A	B	Y	A	N	P	D	L	P	U	R	U
D	A	W	A	R	N	E	R	T	K	P	M	E	H	Q	V	U	Z
B	A	Z	H	T	J	Z	E	O	D	R	W	C	W	A	Y	I	M
P	J	S	Z	S	Q	L	V	T	K	X	N	M	B	B	W	S	X
S	A	V	R	P	S	G	J	G	A	M	K	B	D	H	T	A	F
K	H	X	A	D	Z	S	T	M	D	P	M	X	K	H	O	N	N
R	B	E	T	S	Q	L	J	G	A	C	Y	T	C	K	N	D	U
A	A	L	R	M	J	G	D	N	C	B	A	S	T	O	K	E	S
I	T	W	I	I	V	A	D	U	A	P	P	A	H	T	U	V	R
N	Z	N	P	T	O	E	L	N	A	X	Y	C	K	S	B	N	D
A	Y	M	A	H	Y	L	C	Z	S	F	X	R	P	W	G	Z	W
Y	R	G	T	P	U	Y	O	U	G	Z	I	V	E	C	N	D	X
F	J	Y	H	M	R	M	W	W	O	V	Q	K	O	X	F	G	N
Y	Q	P	I	S	V	R	S	L	H	A	Q	J	N	M	C	T	L

S

मिनी सुडोकू - 2917

	4			5	2
		2	1		
					3
2					
		6	4		
4	5				

इस पहेली की खाली जगहों में एक से 6 के बीच के अंक भरे जाने हैं। किसी भी आड़ी या खड़ी पंक्ति में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है किसी ब्लाक में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है।

हल करने का समय, शुरु........... खत्म...........

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

गणित का चौराहा -2976

	+		+		11
+	■	×	■	+	
	+		-		11
×	■	-	■	×	
	+		+		17
38		34		22	

हल करने का समय, शुरु........ खत्म........

खाली जगहों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर समीकरण को पूरा करें। किसी भी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है। प्रत्येक आड़ी या खड़ी पंक्ति एक गणित समीकरण है। याद रहे कि गुणा और भाग पहले करना है, जोड़ व घटाना बाद में।

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

छत्तीसगढ़ शब्द पहेली क्रमांक-4056

1	2		3		4	■	5		6
■		■		■	7	8		■	
9		■	10		■		■	11	
12		■	■	■	13			■	■
	■	■	■	14	■		■	15	■
■	16	■	■		■	■	17		
18					19		■		■
■		■	■	■		■	■	■	20
21		22	23	■		■	■	24	
■	■	25		■	26				■

(उत्तर आज के ही अंक में किसी पृष्ठ पर)

संकेत :-

बाएं से दाएं :-

1. सत्यम कम्प्युटर के संस्थापक
5. दास, सेवक, नौकर
7. नाव चलाने वाला
9. बैल, मूर्ख मनुष्य
10. बुश, खराब
11. पेड़-पौधे का वह भाग जिसका उपयोग औषधि बनाने में किया जाता है
12. अगर, यदि
13. प्राप्त, परिणाम
17. क्रिकेट पर आधारित अमृता राव, हरमन बावेजा की फिल्म
18. युवाओं में लोकप्रिय पर हिंदुवादी संगठनों को पसंद नहीं
21. चिंता, फिक्र
24. आग की लपट
25. जिद, हट
26. अचानक, सइया

ऊपर से नीचे:-

2. स्वादिष्ट, रुचिकर
3. लुप्त, गुम
4. पुराना, प्राचीन
5. खड़िया
6. दूध को औंटाकर बनाई गई मिठाई
8. पुराने समय की इस अभिनेत्री ने हाल ही में अपने 70 वर्षीय पति पर प्रताड़ना का आरोप लगाया है
9. फर्जी, जाली
14. तमाचा, थप्पड़
15. कलाकार, अभिनेता (अं.)
16. मन को हरने वाला
19. अत:
20. थैला, बस्ता
22. हमला, दिन, जिद, रट
24. रंज गम